Daily Gospel Reflections in Hindi

13 August 2019

लूकस 4: 25 - 30

PROPHET IS NEGLECTED IN HIS HOMETOWN

अपने नगर में नबी का स्वागत नहीं होता। प्रभु येसु ने यह बात स्वयं के अनुभव से कहा। जब वे अपने नगर कफरनाहूम पहुँचे और उन्होंने प्रवचन दिया तब लोग उनकी शिक्षा और अधिकार पर प्रश्न उठाने लगे कि उन्हें यह ज्ञान कहां से प्राप्त हुआ। अक्सर हम देखते हैं कि लोग उन को सम्मान हीं देते जो उनके मुहल्ले से या गाँव से निकल कर किसी बड़े पद पर पहुँचे हो। इस का कारण है कि वे उस व्यक्ति के अतीत और परवरिश जानते हैं या इस बात से ईष्या करतें है कि कैसें यह व्यक्ति इस पद पर पहुँच गया! लेकिन प्रभु येसु सेरेप्ता की विधवा और नामान के उदाहारण के द्वारा यह समझाते हैं कि लोगों के इसी मनोभाव के कारण वे ईश्वर के वरदान से वंचित हो जाते हैं।

संत पॉलुस अपने पत्र में लिखते हैं कि गणमान्य लोगों को लज्जित करने के लिए ईश्वर ने उन लागों को चुना जो संसार की दृष्टि में नगण्य हैं (1: कंरिथ1:27)। स्वयं प्रभु ने कई बार कहा कि मैं अपनी महिमा नहीं चाहता मेरा स्वर्गिक पिता मुझे महिमान्वित करेगा। प्रभु से वरदान पाने के लिए नम्रता अति आवश्यक है। "धन्य हैं जो मन के दीन हैं उन्हें स्वर्ग राज्य प्राप्त होगा"(मत्ती:5) जब हम प्रभु के कार्य के लिये नीचे झुकने तैयार हो तो प्रभु स्वयं हमें ऊपर उठायेगा। हामान के उदाहारण से हमें सीख मिलती है कि आज्ञापालन से हम इश्वर के कृपा पात्र बन जाते हैं

Rev. Fr. Anil Francis

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019